



चित्रकूट के पौराणिक धर्म स्थलों का क्षेत्रीय विकास में प्रभावात्मक अध्ययन: आध्यात्मिक, आर्थिक एवं सामाजिक संदर्भ में

आशुतोष मंडावी, पीएच-डी, पुरुषोत्तम सिंह, पीएच-डी, प्रबंधन संकाय
कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत
रुचि सिंह, पीएच-डी, प्रबंधन संकाय
महात्मा गांधी चित्रकूट, ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट, सतना, मध्य प्रदेश भारत

ORIGINAL ARTICLE



Authors

आशुतोष मंडावी, पीएच-डी
पुरुषोत्तम सिंह, पीएच-डी
रुचि सिंह, पीएच-डी

E-mail : ashutosh.mandavi@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 29/06/2026
Revised on : 30/08/2026
Accepted on : 08/09/2026
Overall Similarity : 00% on 31/08/2026



Plagiarism Checker X - Report

Originality Assessment

0%

Overall Similarity

Date: Aug 31, 2026 (06:54 AM)
Matches: 0 / 3990 words
Sources: 0

Remarks: No similarity found,
your document looks healthy.

Verify Report:
Scan this QR Code



शोध सार

चित्रकूट भारतीय सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक परंपरा में अत्यंत महत्वपूर्ण तीर्थ क्षेत्र के रूप में प्रतिष्ठित है। रामायणकालीन मान्यताओं, ऋषि-मुनियों की तपस्थली तथा धार्मिक आस्था से जुड़े अनेक पौराणिक स्थलों के कारण चित्रकूट का धार्मिक पर्यटन के मानचित्र पर विशिष्ट स्थान है। प्रस्तुत शोधपत्र में चित्रकूट के छह प्रमुख पौराणिक धर्मस्थलों-श्री कामतानाथ, अनसूया आश्रम, गुप्त गोदावरी, स्फटिकशिला, सुतीक्ष्ण मुनि आश्रम एवं शरभंग मुनि आश्रम, के क्षेत्रीय विकास पर पड़ने वाले प्रभाव का आध्यात्मिक, आर्थिक एवं सामाजिक दृष्टिकोण से अध्ययन किया गया है। पौराणिक धर्मस्थल केवल धार्मिक आस्था के केंद्र नहीं हैं, बल्कि वे स्थानीय एवं क्षेत्रीय विकास की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण सामाजिक-आर्थिक उत्प्रेरक की भूमिका निभाते हैं। हालांकि, अनियोजित पर्यटन, पर्यावरणीय दबाव, मौसमी रोजगार, भीड़ प्रबंधन तथा मूल धार्मिक स्वरूप के संरक्षण जैसी चुनौतियाँ भी विद्यमान हैं। अतः धार्मिक पर्यटन और स्थानीय विकास के बीच संतुलित एवं सतत मॉडल विकसित करने की आवश्यकता है।

मुख्य शब्द

चित्रकूट, पौराणिक धर्मस्थल, धार्मिक पर्यटन, क्षेत्रीय विकास, आध्यात्मिकता, स्थानीय अर्थव्यवस्था.

प्रस्तावना

भारत की सांस्कृतिक परंपरा में तीर्थ एवं धार्मिक स्थल केवल पूजा-अर्चना के केंद्र नहीं रहे हैं, बल्कि उन्होंने समाज के सांस्कृतिक, आर्थिक एवं सामाजिक जीवन को भी प्रभावित किया है। भारतीय ज्ञान परंपरा में तीर्थयात्रा को आत्मशुद्धि, आध्यात्मिक उन्नयन, सांस्कृतिक आदान-प्रदान तथा सामाजिक एकता का माध्यम माना गया है। चित्रकूट इसी परंपरा का एक महत्वपूर्ण केंद्र है। मंदाकिनी नदी, वनांचल, पर्वतीय भू-दृश्य तथा रामायण से संबंधित पौराणिक आख्यानों ने चित्रकूट को

विशिष्ट धार्मिक पहचान प्रदान की है। धार्मिक विश्वास के अनुसार भगवान श्रीराम, माता सीता एवं लक्ष्मण ने वनवास काल का महत्वपूर्ण समय चित्रकूट में व्यतीत किया। इसी कारण चित्रकूट से जुड़े अनेक स्थल आज भी श्रद्धा एवं धार्मिक पर्यटन के केंद्र हैं।

प्रस्तुत अध्ययन में सामान्य पर्यटन की अपेक्षा विशेष रूप से पौराणिक धार्मिक स्थलों को अध्ययन की आधार इकाई बनाया गया है। इनमें श्री कामतानाथ, अनसूया आश्रम, गुप्त गोदावरी, स्फटिक शिला, सुतीक्ष्ण मुनि आश्रम एवं शरभंग मुनि आश्रम प्रमुख हैं।

इन स्थलों पर निरंतर आने वाले श्रद्धालुओं से स्थानीय बाजार, परिवहन, होटल एवं धर्मशाला, भोजनालय, पूजा सामग्री, हस्तशिल्प, स्थानीय उत्पाद तथा अन्य सेवा क्षेत्रों को आर्थिक गतिविधि प्राप्त होती है साथ ही तीर्थयात्रा स्थानीय समाज में सांस्कृतिक चेतना, धार्मिक परंपराओं के संरक्षण एवं सामाजिक संपर्क को भी प्रभावित करती है।

इस दृष्टि से यह अध्ययन इस प्रश्न पर केंद्रित है कि पौराणिक धर्मस्थल चित्रकूट के क्षेत्रीय विकास को किस सीमा तक प्रभावित करते हैं और इस प्रभाव का स्वरूप आध्यात्मिक, आर्थिक तथा सामाजिक स्तर पर क्या है।

अध्ययन की पृष्ठभूमि

चित्रकूट की धार्मिक महत्ता मुख्यतः रामायण परंपरा एवं ऋषि-मुनियों से संबंधित पौराणिक आख्यानों में निहित है। यहां स्थित विभिन्न स्थल धार्मिक आस्था के साथ-साथ भारतीय सांस्कृतिक स्मृति के महत्वपूर्ण प्रतीक हैं।

1. **श्री कामतानाथ:** श्री कामतानाथ चित्रकूट की धार्मिक पहचान का प्रमुख केंद्र है। कामदगिरि परिक्रमा से जुड़ी धार्मिक मान्यता के कारण बड़ी संख्या में श्रद्धालु यहां आते हैं। धार्मिक यात्रियों की निरंतर आवाजाही स्थानीय दुकानदारों, पूजा सामग्री विक्रेताओं, भोजनालयों, परिवहन तथा अन्य सेवा गतिविधियों को प्रोत्साहित करती है।
2. **अनसूया आश्रम:** अनसूया आश्रम भारतीय धार्मिक एवं पौराणिक परंपरा में माता अनसूया से संबंधित महत्वपूर्ण स्थल है। आश्रम की धार्मिक मान्यता श्रद्धालुओं को आकर्षित करती है। यहां की आध्यात्मिक एवं प्राकृतिक परिवेश स्थानीय धार्मिक पर्यटन को विशेष स्वरूप प्रदान करता है।
3. **गुप्त गोदावरी:** गुप्त गोदावरी गुफाओं से संबंधित धार्मिक मान्यताएँ इसे चित्रकूट के महत्वपूर्ण पौराणिक आकर्षणों में स्थान देती हैं। धार्मिक पर्यटन के साथ प्राकृतिक एवं भौगोलिक विशेषताओं के कारण भी यह स्थल यात्रियों के लिए महत्वपूर्ण है।
4. **स्फटिक शिला:** स्फटिक शिला मंदाकिनी तट से जुड़ा धार्मिक स्थल है। पौराणिक मान्यताओं के कारण श्रद्धालुओं के लिए इसका विशेष महत्व है। यह स्थल चित्रकूट की धार्मिक यात्रा के प्रमुख पड़ावों में शामिल है।
5. **सुतीक्ष्ण मुनि आश्रम:** सुतीक्ष्ण मुनि आश्रम रामायणकालीन ऋषि परंपरा से संबद्ध माना जाता है। यह स्थल चित्रकूट की व्यापक पौराणिक भौगोलिकता को समझने में महत्वपूर्ण है तथा धार्मिक यात्राओं के माध्यम से स्थानीय क्षेत्रों को मुख्य धार्मिक पर्यटन परिपथ से जोड़ने की क्षमता रखता है।
6. **शरभंग मुनि आश्रम:** शरभंग मुनि आश्रम भी रामायण एवं ऋषि परंपरा से संबंधित महत्वपूर्ण पौराणिक स्थल है। धार्मिक यात्राओं के माध्यम से इस प्रकार के अपेक्षाकृत दूरस्थ स्थलों को पर्यटन गतिविधियों से जोड़कर क्षेत्रीय विकास के नए अवसर उत्पन्न किए जा सकते हैं।

समस्या कथन

चित्रकूट में धार्मिक पर्यटन की निरंतर वृद्धि के बावजूद यह प्रश्न महत्वपूर्ण है कि इसका वास्तविक लाभ स्थानीय समुदाय को किस सीमा तक प्राप्त हो रहा है। क्या तीर्थयात्रियों की संख्या में वृद्धि के साथ स्थानीय रोजगार एवं आय में वृद्धि हुई है? क्या धार्मिक पर्यटन ने स्थानीय संस्कृति एवं सामाजिक संबंधों को मजबूत किया है? क्या पौराणिक स्थलों के विकास से क्षेत्रीय असमानताओं को कम करने में सहायता मिल रही है? इसके साथ ही यह भी आवश्यक है कि धार्मिक स्थलों का विकास उनकी पौराणिक एवं आध्यात्मिक पहचान को प्रभावित किए बिना किया जाए। अतः धार्मिक पर्यटन, स्थानीय विकास एवं सांस्कृतिक संरक्षण के बीच संतुलन स्थापित करना अध्ययन की प्रमुख समस्या है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. चित्रकूट के चयनित पौराणिक धर्मस्थलों की धार्मिक एवं सांस्कृतिक महत्ता का अध्ययन करना।
2. पौराणिक धर्मस्थलों का स्थानीय एवं क्षेत्रीय आर्थिक विकास पर प्रभाव ज्ञात करना।

3. धार्मिक पर्यटन से उत्पन्न प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रोजगार के अवसरों का अध्ययन करना।
4. स्थानीय व्यापार एवं सेवा क्षेत्र पर तीर्थयात्रियों के प्रभाव का विश्लेषण करना।
5. पौराणिक धर्मस्थलों का स्थानीय सामाजिक जीवन एवं सांस्कृतिक संरक्षण पर प्रभाव ज्ञात करना।
6. इन स्थलों के कारण चित्रकूट की क्षेत्रीय एवं धार्मिक पहचान में हुए परिवर्तन का अध्ययन करना।
7. पौराणिक धर्मस्थलों के सतत् एवं संतुलित विकास हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।

परिकल्पनाएँ

- H₁:** चित्रकूट के पौराणिक धर्मस्थलों से क्षेत्रीय आर्थिक विकास पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
H₂: पौराणिक धर्मस्थलों से संबंधित धार्मिक पर्यटन स्थानीय रोजगार के अवसरों में वृद्धि करता है।
H₃: पौराणिक धर्मस्थलों पर होने वाली तीर्थयात्रा स्थानीय सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है।
H₄: धार्मिक पर्यटन से स्थानीय बाजार एवं सेवा क्षेत्र की गतिविधियों में वृद्धि होती है।
H₅: पौराणिक धर्मस्थलों का विकास चित्रकूट की क्षेत्रीय धार्मिक एवं सांस्कृतिक पहचान को मजबूत करता है।

शोध पद्धति

1. शोध की प्रकृति

प्रस्तुत अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति का है। अध्ययन में पौराणिक धर्मस्थलों और उनके आसपास होने वाली सामाजिक एवं आर्थिक गतिविधियों को समाहित किया गया है। अध्ययन हेतु कुल 200 उत्तरदाताओं तीर्थयात्री एवं श्रद्धालु, स्थानीय निवासी, दुकानदार, होटल एवं धर्मशाला संचालक, स्थानीय परिवहन प्रदाता, पूजा सामग्री विक्रेता, स्थानीय सेवा प्रदाता एवं धार्मिक स्थल से जुड़े व्यक्तियों को चुना गया है।

2. अध्ययन क्षेत्र

अध्ययन क्षेत्र के रूप में चित्रकूट क्षेत्र के निम्नलिखित 6 प्रमुख पौराणिक धर्मस्थलों को चयनित किया गया है:

1. श्री कामतानाथ, 2. अनसूया आश्रम, 3. गुप्त गोदावरी, 4. स्फटिक शिला, 5. सुतीक्ष्ण मुनि आश्रम, 6. शरभंग मुनि आश्रम।

3. आंकड़ों के स्रोत

प्राथमिक स्रोत: साक्षात्कार अनुसूची, प्रत्यक्ष अवलोकन एवं स्थानीय हितधारकों से बातचीत।

द्वितीयक स्रोत: सरकारी रिपोर्ट, पर्यटन विभाग के दस्तावेज, जनगणना संबंधी सामग्री, पुस्तकें, शोध-पत्र, पत्र-पत्रिकाएँ तथा उपलब्ध पौराणिक एवं ऐतिहासिक साहित्य।

4. विश्लेषण की तकनीक

प्राप्त आंकड़ों का प्रतिशत, औसत, रैंकिंग तथा आवश्यकता के अनुसार सांख्यिकीय तकनीकों द्वारा विश्लेषण किया गया है।

पौराणिक धर्मस्थलों का आध्यात्मिक प्रभाव

चित्रकूट के पौराणिक धर्मस्थलों की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता उनका आध्यात्मिक प्रभाव है। यहां आने वाला श्रद्धालु केवल पर्यटन की दृष्टि से नहीं आता, बल्कि धार्मिक आस्था, दर्शन, पूजा, परिक्रमा, ध्यान एवं आत्मिक शांति की भावना से प्रेरित होता है। श्री कामतानाथ की परिक्रमा, अनसूया आश्रम का आध्यात्मिक वातावरण, गुप्त गोदावरी की पौराणिक गुफाएँ तथा स्फटिक शिला जैसे स्थल धार्मिक विश्वास को सुदृढ़ करते हैं। सुतीक्ष्ण एवं शरभंग मुनि आश्रम जैसे स्थल ऋषि परंपरा और तप-संस्कृति की स्मृति को जीवित रखते हैं। इन स्थलों के माध्यम से नई पीढ़ी को रामायण, ऋषि परंपरा, भारतीय दर्शन तथा धार्मिक-सांस्कृतिक मूल्यों से परिचित होने का अवसर मिलता है।

आर्थिक विकास पर प्रभाव

धार्मिक पर्यटन स्थानीय अर्थव्यवस्था के लिए बहुगुणक प्रभाव उत्पन्न कर सकता है। एक तीर्थयात्री द्वारा खर्च की गई राशि केवल धार्मिक स्थल तक सीमित नहीं रहती, बल्कि भोजन, आवास, परिवहन, पूजा सामग्री, स्थानीय बाजार और अन्य सेवाओं में वितरित होती है।

सामाजिक प्रभाव

पौराणिक धर्मस्थल स्थानीय समाज में सामाजिक संपर्क एवं सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देते हैं। विभिन्न राज्यों एवं क्षेत्रों से आने वाले श्रद्धालुओं के कारण स्थानीय लोगों का बाहरी समाज से संपर्क बढ़ता है।

क्षेत्रीय विकास पर समग्र प्रभाव

पौराणिक धर्मस्थलों का प्रभाव केवल उनके तत्काल आसपास के क्षेत्र तक सीमित नहीं रहता। यदि विभिन्न स्थलों को एक समेकित धार्मिक पर्यटन परिपथ के रूप में विकसित किया जाए तो इसका प्रभाव व्यापक क्षेत्र पर पड़ सकता है।

इस प्रक्रिया में सड़क, पेयजल, स्वच्छता, बिजली, परिवहन, डिजिटल सूचना, स्वास्थ्य एवं सुरक्षा जैसी सुविधाओं में सुधार की आवश्यकता उत्पन्न होती है। इस प्रकार धार्मिक पर्यटन क्षेत्रीय आधारभूत संरचना के विकास का प्रेरक भी बन सकता है।

प्रमुख चुनौतियाँ

पौराणिक धर्मस्थलों के विकास के साथ कुछ चुनौतियाँ भी निम्नलिखित हैं:

1. तीर्थयात्रियों की संख्या में मौसमी उतार-चढ़ाव।
2. स्वच्छता एवं ठोस अपशिष्ट प्रबंधन की समस्या।
3. पर्यावरण पर बढ़ता दबाव।
4. अनियोजित निर्माण।
5. स्थानीय संस्कृति के व्यावसायीकरण की संभावना।
6. दूरस्थ पौराणिक स्थलों तक पर्याप्त सुविधाओं का अभाव।
7. स्थानीय समुदाय की सीमित भागीदारी।
8. पर्यटन आय का असमान वितरण।
9. धार्मिक स्थलों की मूल आध्यात्मिक पहचान के संरक्षण की चुनौती।
10. भीड़ एवं यातायात प्रबंधन।

परिणाम एवं चर्चा

अध्ययन के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु चयनित 200 उत्तरदाताओं से प्राथमिक आंकड़े एकत्रित किए गए। उत्तरदाताओं से प्राप्त उत्तर को 10 तालिकाओं के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है।

तालिका क्रमांक 1: उत्तरदाताओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का वर्गीकरण (N= 200)

क्र.	चर	वर्ग	संख्या	प्रतिशत
1.	लिंग	पुरुष	122	61.00
		महिला	78	39.00
2.	आयु	18-30 वर्ष	38	19.00
		31-45 वर्ष	67	35.00
		46-60 वर्ष	61	30.50
		60 वर्ष से अधिक	34	17.00
3.	शिक्षा	प्राथमिक/माध्यमिक	48	24.00
		उच्च माध्यमिक	44	22.00
		स्नातक	62	31.00
		स्नातकोत्तर एवं अधिक	46	23.00
4.	व्यवसाय	कृषि	54	27.00
		व्यापार	42	21.00
		सेवा	38	19.00
		स्वरोजगार/पर्यटन सेवा	36	18.00
		अन्य	30	15.00

(स्रोत: प्राथमिक समंक)

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य चित्रकूट के छह प्रमुख पौराणिक धर्मस्थलों—श्री कामतानाथ, अनसूया आश्रम, गुप्त गोदावरी, स्फटिक शिला, सुतीक्ष्ण मुनि आश्रम एवं शरभंग मुनि आश्रम, के क्षेत्रीय विकास पर पड़ने वाले आध्यात्मिक, आर्थिक एवं

सामाजिक प्रभावों का विश्लेषण करना है। अध्ययन में 200 उत्तरदाताओं को आधार मानते हुए प्राप्त आंकड़ों का प्रतिशत एवं तुलनात्मक विश्लेषण में पाया गया कि अध्ययन में शामिल उत्तरदाताओं में 61 प्रतिशत पुरुष तथा 39 प्रतिशत महिलाएँ थीं। आयु की दृष्टि से 31–45 वर्ष आयु वर्ग का प्रतिनिधित्व सर्वाधिक 33–50 प्रतिशत रहा, जबकि 46–60 वर्ष आयु वर्ग 30–50 प्रतिशत था। शैक्षिक स्थिति में स्नातक स्तर के उत्तरदाताओं की हिस्सेदारी सर्वाधिक 31 प्रतिशत रही। इसके बाद प्राथमिक/माध्यमिक स्तर 24 प्रतिशत तथा स्नातकोत्तर एवं उससे अधिक शिक्षा वाले 23 प्रतिशत उत्तरदाता रहे। व्यवसाय की दृष्टि से कृषि से जुड़े उत्तरदाताओं की संख्या 27 प्रतिशत, व्यापार 21 प्रतिशत, सेवा 19 प्रतिशत तथा स्वरोजगारधर्म्यटन सेवा 18 प्रतिशत रही। अध्ययन में ग्रामीण, व्यापारिक, सेवा एवं पर्यटन आधारित विभिन्न सामाजिक-आर्थिक समूहों को सम्मिलित किया गया है। यह विविधता धार्मिक पर्यटन के बहुआयामी प्रभावों को समझने में उपयोगी है।

तालिका क्रमांक 2: तीर्थयात्रियों की यात्रा का उद्देश्य

क्र.	यात्रा का उद्देश्य	संख्या	प्रतिशत	रैंक
1.	धार्मिक दर्शन एवं पूजा	174	87.00	I
2.	आध्यात्मिक शांति/आत्मिक संतोष	151	75.50	II
3.	पौराणिक स्थलों का दर्शन	139	69.50	III
4.	परिवार के साथ तीर्थयात्रा	126	63.00	IV
5.	सांस्कृतिक/धार्मिक जानकारी	108	54.00	V
6.	प्राकृतिक एवं स्थानीय परिवेश का अनुभव	082	41.00	VI

(स्रोत: प्राथमिक समंक)

अध्ययन में पाया गया कि 87 प्रतिशत तीर्थयात्रियों का प्रमुख उद्देश्य धार्मिक दर्शन एवं पूजा था। इसके बाद 75.50 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने आध्यात्मिक शांति एवं आत्मिक संतोष को यात्रा का उद्देश्य बताया। 69.50 प्रतिशत उत्तरदाता पौराणिक स्थलों के दर्शन से प्रेरित थे। परिवार के साथ तीर्थयात्रा करने वाले उत्तरदाताओं की संख्या 63 प्रतिशत रही।

स्पष्ट होता है कि चित्रकूट में धार्मिक पर्यटन का मूल आधार अभी भी आस्था एवं आध्यात्मिकता है। पर्यटन का मनोरंजनात्मक स्वरूप यहां धार्मिक उद्देश्य की तुलना में गौण दिखाई देता है। यह तथ्य चित्रकूट के पौराणिक स्थलों की विशिष्ट पहचान को रेखांकित करता है। संकेत मिलता है कि चित्रकूट की तीर्थयात्रा व्यक्तिगत धार्मिक गतिविधि के साथ-साथ पारिवारिक एवं सामाजिक परंपरा का भी हिस्सा है।

तालिका क्रमांक 3: विभिन्न पौराणिक स्थलों पर आने वाले श्रद्धालुओं की आवृत्ति

क्र.	पौराणिक स्थल	पहली बार	कभी-कभी	बार-बार	नियमित	कुल
1.	श्री कामतानाथ	072	61	45	22	200
2.	अनसूया आश्रम	089	67	32	12	200
3.	गुप्त गोदावरी	103	61	28	08	200
4.	स्फटिक शिला	096	65	29	10	200
5.	सुतीक्ष्ण मुनि आश्रम	124	48	21	07	200
6.	शरभंग मुनि आश्रम	131	44	18	07	200

(स्रोत: प्राथमिक समंक)

विभिन्न स्थलों की यात्रा आवृत्ति में उल्लेखनीय अंतर पाया गया। श्री कामतानाथ में बार-बार एवं नियमित रूप से आने वाले श्रद्धालुओं का अनुपात अन्य चयनित स्थलों की तुलना में अधिक दिखाई देता है। इसका प्रमुख कारण कामतानाथ की व्यापक धार्मिक मान्यता एवं परिक्रमा परंपरा माना जा सकता है।

इसके विपरीत सुतीक्ष्ण मुनि आश्रम एवं शरभंग मुनि आश्रम में पहली बार आने वाले श्रद्धालुओं का अनुपात अधिक है। यह स्थिति इन स्थलों की धार्मिक महत्ता के बावजूद अपेक्षाकृत कम प्रचार, परिवहन सुविधा एवं पर्यटन परिपथ से सीमित जुड़ाव की ओर संकेत कर सकती है।

अतः यदि इन सभी छह स्थलों को एकीकृत "पौराणिक धार्मिक पर्यटन परिपथ" के रूप में विकसित किया जाए, तो श्रद्धालुओं की यात्रा अवधि तथा स्थानीय आर्थिक गतिविधियों में वृद्धि की संभावना है।

तालिका क्रमांक 4: स्थानीय लोगों की आय पर धार्मिक पर्यटन का प्रभाव

क्र.	प्रभाव का स्तर	संख्या	प्रतिशत
1.	अत्यधिक सकारात्मक	48	24.00
2.	सकारात्मक	79	39.50
3.	मध्यम	42	21.00
4.	कोई विशेष प्रभाव नहीं	21	10.50
5.	नकारात्मक	10	5.00
	कुल	200	100.00

(स्रोत: प्राथमिक समंक)

अध्ययन में 24 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने धार्मिक पर्यटन का अपनी आय पर अत्यधिक सकारात्मक प्रभाव तथा 39.50 प्रतिशत ने सकारात्मक प्रभाव बताया। इस प्रकार कुल 63.50 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने आय पर सकारात्मक प्रभाव स्वीकार किया। केवल 10.50 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि धार्मिक पर्यटन का उनकी आय पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा, जबकि 5 प्रतिशत ने नकारात्मक प्रभाव व्यक्त किया।

यह परिणाम इस धारणा का समर्थन करता है कि धार्मिक पर्यटन स्थानीय अर्थव्यवस्था में आय के अतिरिक्त स्रोत उत्पन्न करता है। विशेष रूप से वे परिवार जिनका प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष संबंध व्यापार, परिवहन, आवास, भोजन अथवा धार्मिक सामग्री से है, वे इससे अधिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं। हालांकि, धार्मिक पर्यटन से प्राप्त आर्थिक लाभ सभी वर्गों में समान रूप से वितरित नहीं होता इसलिए भविष्य की विकास रणनीति में स्थानीय समुदाय की भागीदारी एवं लाभ-वितरण को प्राथमिकता देना आवश्यक है।

तालिका क्रमांक 5: धार्मिक पर्यटन से प्राप्त रोजगार के अवसर

क्र.	रोजगार/आय का क्षेत्र	संख्या	प्रतिशत	रैंक
1.	दुकान/स्थानीय व्यापार	71	35.50	I
2.	होटल/धर्मशाला/आवास	48	24.00	II
3.	परिवहन सेवा	44	22.00	I
4.	पूजा सामग्री/प्रसाद	83	41.50	IV
5.	भोजनालय/चाय-नाश्ता	52	26.00	V
6.	गाइड/धार्मिक सेवा	29	14.50	VI
7.	हस्तशिल्प/स्थानीय उत्पाद	34	17.00	VII

(स्रोत: प्राथमिक समंक)

धार्मिक पर्यटन ने स्थानीय स्तर पर विभिन्न प्रकार के रोजगार एवं स्वरोजगार के अवसर उत्पन्न किए हैं। पूजा सामग्री एवं प्रसाद से जुड़े व्यवसाय को 41.50 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने प्रमुख आय/रोजगार क्षेत्र के रूप में बताया। स्थानीय व्यापार 35.50 प्रतिशत तथा भोजनालय/चाय-नाश्ता क्षेत्र 26 प्रतिशत रहा। होटल एवं धर्मशाला से जुड़े रोजगार को 24 प्रतिशत तथा परिवहन को 22 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने महत्वपूर्ण माना।

इससे स्पष्ट होता है कि धार्मिक पर्यटन का रोजगार प्रभाव केवल मंदिर या आश्रम तक सीमित नहीं रहता, बल्कि इसके आसपास की पूरी सेवा अर्थव्यवस्था को प्रभावित करता है। इसे पर्यटन का बहुगुणक आर्थिक प्रभाव कहा जा सकता है। विशेष रूप से स्थानीय युवाओं को गाइड, डिजिटल सूचना सेवा, परिवहन, आतिथ्य एवं स्थानीय उत्पादों के विपणन से जोड़कर रोजगार के अवसरों को और बढ़ाया जा सकता है।

तालिका क्रमांक 6: स्थानीय व्यापार पर धार्मिक पर्यटन का प्रभाव

क्र.	प्रभाव	संख्या	प्रतिशत
1.	बहुत अधिक वृद्धि	51	25.50
2.	वृद्धि	83	41.50
3.	सामान्य/मध्यम प्रभाव	39	19.50
4.	कोई प्रभाव नहीं	19	9.50
5.	कमी/नकारात्मक प्रभाव	8	8.00
	कुल	200	100.00

(स्रोत: प्राथमिक समक)

अध्ययन में 25.50 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने स्थानीय व्यापार में बहुत अधिक वृद्धि तथा 41.50 प्रतिशत ने वृद्धि स्वीकार की, अर्थात् कुल 67 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार धार्मिक पर्यटन ने व्यापारिक गतिविधियों को सकारात्मक रूप से प्रभावित किया। तीर्थयात्रियों की संख्या में वृद्धि से भोजन, पेयजल, पूजा सामग्री, फूल, प्रसाद, धार्मिक साहित्य, स्थानीय उत्पाद एवं अन्य वस्तुओं की मांग बढ़ती है। इसका सीधा लाभ स्थानीय दुकानदारों एवं छोटे व्यापारियों को मिलता है। हालांकि, व्यापार में मौसमी उतार-चढ़ाव धार्मिक पर्यटन की एक प्रमुख चुनौती है। प्रमुख धार्मिक पर्वों एवं विशेष अवसरों पर मांग बहुत अधिक हो सकती है, जबकि सामान्य दिनों में व्यापार अपेक्षाकृत कम हो सकता है इसलिए स्थानीय व्यवसायों को वर्षभर पर्यटक आकर्षित करने वाली योजनाओं से जोड़ना आवश्यक है।

तालिका क्रमांक 7: पौराणिक धर्मस्थलों का आध्यात्मिक प्रभाव

क्र.	आध्यात्मिक प्रभाव	संख्या	प्रतिशत	रैंक
1.	आत्मिक शांति में वृद्धि	164	82.00	I
2.	धार्मिक आस्था में वृद्धि	158	79.00	II
3.	भारतीय संस्कृति के प्रति रुचि	143	71.50	III
4.	सकारात्मक मानसिक अनुभव	139	69.50	IV
5.	धार्मिक परंपराओं के प्रति जुड़ाव	132	66.00	V
6.	जीवन-मूल्यों के प्रति जागरूकता	118	59.00	VI

(स्रोत: प्राथमिक समक)

तालिका से ज्ञात होता है कि 82 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने आत्मिक शांति में वृद्धि को प्रमुख प्रभाव माना, जबकि 79 प्रतिशत ने धार्मिक आस्था में वृद्धि स्वीकार की। 71.50 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने भारतीय संस्कृति के प्रति रुचि बढ़ने की बात कही। 69.50 प्रतिशत ने सकारात्मक मानसिक अनुभव तथा 66 प्रतिशत ने धार्मिक परंपराओं के प्रति जुड़ाव को महत्वपूर्ण प्रभाव माना।

इन परिणामों से स्पष्ट है कि चित्रकूट के पौराणिक धर्मस्थल केवल पर्यटन आकर्षण नहीं हैं, बल्कि वे श्रद्धालुओं के लिए आध्यात्मिक अनुभव एवं सांस्कृतिक पुनर्संपर्क के केंद्र हैं। विशेष रूप से श्री कामतानाथ एवं रामायण परंपरा से जुड़े स्थलों की धार्मिक मान्यता श्रद्धालुओं की आस्था को मजबूत करती है। अनसूया, सुतीक्ष्ण एवं शरभंग मुनि से संबंधित स्थल भारतीय ऋषि-परंपरा एवं तप-संस्कृति की स्मृति को जीवित रखते हैं।

तालिका क्रमांक 8: सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रभाव

क्र.	सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभाव	सहमत संख्या	प्रतिशत	रैंक
1.	स्थानीय संस्कृति का संरक्षण	161	80.50	I
2.	सामाजिक संपर्क में वृद्धि	153	76.50	II
3.	धार्मिक परंपराओं का संरक्षण	157	78.50	III
4.	क्षेत्रीय पहचान मजबूत होना	149	74.50	IV
5.	युवाओं में सांस्कृतिक जागरूकता	137	68.50	V
6.	महिला सहभागिता के अवसर	112	56.00	VI
7.	स्थानीय समुदाय में सहयोग की भावना	145	72.50	VII

(स्रोत: प्राथमिक समक)

सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रभाव के संदर्भ में 80.50 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने स्थानीय संस्कृति के संरक्षण को महत्वपूर्ण माना। 78.50 प्रतिशत ने धार्मिक परंपराओं के संरक्षण तथा 76.50 प्रतिशत ने सामाजिक संपर्क में वृद्धि को स्वीकार किया। 74.50 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार धार्मिक स्थलों ने चित्रकूट की क्षेत्रीय पहचान को मजबूत किया। 72.50 प्रतिशत ने स्थानीय समुदाय में सहयोग की भावना बढ़ने की बात कही।

इन परिणामों से यह निष्कर्ष निकलता है कि पौराणिक धर्मस्थल सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण के जीवंत केंद्र के रूप में कार्य कर रहे हैं। धार्मिक यात्रियों के साथ होने वाला सांस्कृतिक आदान-प्रदान स्थानीय समाज को व्यापक भारतीय सांस्कृतिक परिदृश्य से जोड़ता है। अध्ययन से संकेत मिला है कि महिला स्वयं सहायता समूहों, स्थानीय खाद्य उत्पादों, हस्तशिल्प एवं प्रसाद निर्माण को धार्मिक पर्यटन से जोड़कर महिला आर्थिक सशक्तीकरण को और बढ़ाया जा सकता है।

तालिका क्रमांक 9: प्रमुख समस्याएँ एवं चुनौतियाँ

क्र.	समस्या/चुनौती	संख्या	प्रतिशत	रैंक
1.	स्वच्छता एवं कचरा प्रबंधन	166	83.00	I
2.	यातायात एवं पार्किंग	151	75.50	II
3.	पेयजल एवं सार्वजनिक सुविधाएँ	139	69.50	III
4.	अनियोजित निर्माण	128	64.00	IV
5.	पर्यावरणीय दबाव	124	62.00	V
6.	स्थानीय लोगों को सीमित आर्थिक लाभ	107	53.50	VI
7.	दूरस्थ स्थलों तक परिवहन की समस्या	102	51.00	VII
8.	पर्याप्त सूचना/साइनबोर्ड का अभाव	96	48.00	VIII

(स्रोत: प्राथमिक समंक)

धार्मिक पर्यटन के सकारात्मक प्रभावों के साथ अनेक चुनौतियाँ भी सामने आईं। 83 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने स्वच्छता एवं कचरा प्रबंधन को प्रमुख समस्या माना। 75.50 प्रतिशत ने यातायात एवं पार्किंग की समस्या तथा 69.50 प्रतिशत ने पेयजल एवं सार्वजनिक सुविधाओं को चुनौती बताया। 64 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने अनियोजित निर्माण तथा 62 प्रतिशत ने पर्यावरणीय दबाव को महत्वपूर्ण समस्या माना।

स्पष्ट है कि तीर्थयात्रियों की संख्या बढ़ने के साथ यदि आधारभूत सुविधाओं का समान अनुपात में विकास नहीं किया जाता, तो धार्मिक पर्यटन क्षेत्रीय विकास के साथ-साथ पर्यावरणीय एवं सामाजिक दबाव भी उत्पन्न कर सकता है। इसलिए चित्रकूट में धार्मिक पर्यटन के विस्तार की नीति "अधिक पर्यटक" के बजाय "सुव्यवस्थित, गुणवत्तापूर्ण एवं सतत पर्यटन" पर आधारित होनी चाहिए।

तालिका क्रमांक 10: क्षेत्रीय विकास हेतु प्राथमिकता वाले सुझाव

क्र.	सुझाव	संख्या	प्रतिशत	रैंक
1.	स्वच्छता एवं कचरा प्रबंधन में सुधार	173	86.50	I
2.	सड़क एवं परिवहन सुविधाओं का विस्तार	165	82.50	II
3.	स्थानीय युवाओं को पर्यटन प्रशिक्षण	157	78.50	III
4.	स्थानीय उत्पादों के विपणन की व्यवस्था	151	75.50	IV
5.	महिला स्वयं सहायता समूहों को जोड़ना	143	71.50	V
6.	पौराणिक स्थलों का धार्मिक पर्यटन परिपथ बनाना	139	69.50	VI
7.	डिजिटल सूचना एवं गाइड सुविधा	132	66.00	VII
8.	पर्यावरण संरक्षण एवं हरित पर्यटन	128	64.00	VIII

(स्रोत: प्राथमिक समंक)

उत्तरदाताओं ने क्षेत्रीय विकास के लिए स्वच्छता एवं कचरा प्रबंधन को सर्वाधिक प्राथमिकता दी। 86.50 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इसे आवश्यक माना। इसके बाद सड़क एवं परिवहन सुविधाओं के विस्तार को 82.50 प्रतिशत तथा स्थानीय युवाओं को पर्यटन प्रशिक्षण को 78.50 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने प्राथमिकता दी। स्थानीय उत्पादों के विपणन को 75.50 प्रतिशत तथा महिला स्वयं सहायता समूहों को पर्यटन गतिविधियों से जोड़ने को 71.50 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने महत्वपूर्ण माना।

इन परिणामों से स्पष्ट है कि स्थानीय समुदाय धार्मिक पर्यटन को केवल धार्मिक गतिविधि के रूप में नहीं देखता, बल्कि इसे रोजगार, उद्यमिता एवं क्षेत्रीय विकास के साधन के रूप में भी स्वीकार करता है।

परिकल्पनाओं का सत्यापन

अध्ययन में परीक्षण की गई सभी परिकल्पनाएँ उपलब्ध प्राथमिक आंकड़ों के आधार पर समर्थित पाई गईं। इससे निष्कर्ष निकलता है कि चित्रकूट के पौराणिक धर्मस्थल आध्यात्मिक, आर्थिक एवं सामाजिक तीनों आयामों में क्षेत्रीय विकास के महत्वपूर्ण कारक हैं।

सतत् विकास हेतु सुझाव

1. छह पौराणिक धर्मस्थलों को एक समेकित पौराणिक धार्मिक पर्यटन परिपथ के रूप में विकसित किया जाए तथा प्रत्येक स्थल की पौराणिक एवं सांस्कृतिक जानकारी हिंदी तथा अन्य प्रमुख भाषाओं में उपलब्ध कराई जाए।
2. स्थानीय युवाओं को प्रशिक्षित कर प्रमाणित स्थानीय गाइड बनाया जाए।
3. महिलाओं के स्वयं सहायता समूहों को धार्मिक पर्यटन से जोड़ा जाए।
4. स्थानीय हस्तशिल्प एवं ग्रामोद्योग उत्पादों के लिए बिक्री केंद्र विकसित किए जाएँ।
5. दूरस्थ स्थलों पर सड़क, पेयजल, प्रकाश एवं प्राथमिक चिकित्सा सुविधाओं का विस्तार किया जाए।
6. डिजिटल मैप, QR कोड एवं ऑडियो गाइड जैसी सुविधाएँ विकसित की जाएँ।
7. स्थानीय समुदाय को पर्यटन नियोजन एवं प्रबंधन में सक्रिय भागीदार बनाया जाए।
8. धार्मिक स्थलों के विकास में उनकी पौराणिक एवं आध्यात्मिक गरिमा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाए एवं तीर्थयात्रियों की संख्या, स्थानीय आय, रोजगार एवं पर्यावरणीय प्रभाव का नियमित सर्वेक्षण किया जाए।

निष्कर्ष

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि चित्रकूट के पौराणिक धर्मस्थल—श्री कामतानाथ, अनसूया आश्रम, गुप्त गोदावरी, स्फटिक शिला, सुतीक्ष्ण मुनि आश्रम एवं शरभंग मुनि आश्रम, क्षेत्रीय विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इन स्थलों से श्रद्धालुओं को आध्यात्मिक शांति एवं सांस्कृतिक जुड़ाव प्राप्त होता है, वहीं स्थानीय व्यापार, रोजगार, परिवहन एवं सेवा क्षेत्र को भी आर्थिक लाभ मिलता है। साथ ही ये स्थल स्थानीय संस्कृति, धार्मिक परंपराओं एवं चित्रकूट की क्षेत्रीय पहचान के संरक्षण में योगदान देते हैं। अतः पौराणिक धार्मिक स्थलों का सुव्यवस्थित, समुदाय-आधारित एवं सतत् विकास चित्रकूट के समग्र क्षेत्रीय विकास को और गति प्रदान कर सकता है।

संदर्भ सूची

1. District Chitrakoot Administration (2026) *Places of Interest: Kamtanath, Gupt Godavari, Sati Anusuya and Sphatik Shila*. Government of Uttar Pradesh, Lucknow.
2. Ministry of Tourism, Government of India (2026) *Sphatik Shila, Chitrakoot*. Incredible India, New Delhi.
3. Madhya Pradesh Tourism (2022) *Gupt Godavari: A Secret River & Mysterious Caves in Chitrakoot*. Madhya Pradesh Tourism, Bhopal.
4. भारत सरकार, संस्कृति मंत्रालय (2022) *भारत की सांस्कृतिक विरासत एवं संरक्षण संबंधी प्रतिवेदन*. संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली।
5. मध्य प्रदेश पर्यटन बोर्ड (2024) *चित्रकूट, धार्मिक एवं सांस्कृतिक पर्यटन*, मध्य प्रदेश पर्यटन बोर्ड, भोपाल।
6. मध्य प्रदेश शासन, पर्यटन विभाग (2023) *मध्य प्रदेश पर्यटन नीति एवं विकास संबंधी दस्तावेज*, पर्यटन विभाग, मध्य प्रदेश शासन, भोपाल।
7. वाल्मीकि (2019) *श्रीमद् वाल्मीकि रामायण*, गीता प्रेस संस्करण, गीता प्रेस, गोरखपुर।
8. तुलसीदास (2020) *श्रीरामचरितमानस*, गीता प्रेस, गोरखपुर।
9. गुप्ता, आर. एवं शर्मा, एस. (2020) धार्मिक पर्यटन का स्थानीय अर्थव्यवस्था एवं रोजगार पर प्रभाव. *भारतीय सामाजिक विज्ञान समीक्षा*, 12(1), 67–78।
10. जैन, एस. (2022) सांस्कृतिक विरासत और धार्मिक पर्यटन—सतत् विकास की संभावनाएँ, *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ टूरिज्म एंड हेरिटेज स्टडीज*, 5(2), 112–124।
